बी0एड प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अंक विभाजन

1. आन्तरिक मूल्याँकन – 150 अंक

गतिविधियाँ	अंक
1. सूक्ष्म शिक्षण	10
2. नियमित अभ्यास शिक्षण	20
3. समालोच्य परीक्षा	20
4. अवलोकन कार्यक्रम	15
5. सहायक सामग्री	20
6. श्रव्य–दृश्य यन्त्रों द्वारा प्रदर्शन	10
7. सेमीनार/कार्यशाला (उपस्थिति)	05
8. क्षेत्रीय अभ्यास शिक्षण	50

2. बाह्य मूल्याँकन – 75 अंक
बी0एड प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम के कार्य दिवस

- विश्वविद्यालय द्वारा न्यूनतम 220 कार्य दिवस निर्धारित है।
- जिनमें 120 दिवस सैद्वान्तिक कक्षाएँ।
- 100 दिवस प्रायोगिक कार्य।

बी0एड प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम का वार्षिक पंचांग
सैद्वान्तिक कक्षाएँ:–
बी0एड में नौ विषयों का शिक्षण कराया जाता है जिनमें आठ अनिवार्य, एक ऐच्छिक विषय का अध्ययन कराया जाता है।
सभी विषयों का विवरण एवं उद्देश्य इस प्रकार है:–
प्रथम अनिवार्य विषय
बाल्यावस्था एवं विकास प्रक्रिया

उद्देश्य

- बच्चे को समझने में मनोविज्ञान की भूमिका
- बहुआयामी विकास
- बालक की विकास प्रक्रिया
- अधिगम के लिए सीखना
- एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक उदण्ड़ता

द्वितीय अनिवार्य विषय
समसामयिक भारत और शिक्षा

उद्देश्य

- एक उभरती अवधारणा के रूप में शिक्षा
- मुद्दे और चुनौतियाँ
- संविधान और शिक्षा
- कार्यक्रम और नीतियाँ
- अभिनव और प्रवृतियाँ

तृतीय अनिवार्य विषय
अधिगम और शिक्षण

उद्देश्य

- **अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया**
- **प्रभावी शिक्षण अधिगम के स्त्रोत**
- **शैक्षिक प्रौद्योगिकी**
- **तकनीकी नवाचार के कारण शिक्षण अधिगम की नवीन प्रक्रिया**
- **एक व्यवसाय के रूप में शिक्षण**

चतुर्थ अनिवार्य विषय
भाषाः– पाठ्यचर्चा के आर पार

उद्देश्य

- **भाषा का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, भूमिका, महत्व एवं कार्य।**
- **घर की भाषा, स्कूल की भाषा, औपचारिक एवं अनौपचारिक भाषा, मौखिक व लिखित भाषा।**
- **भाषा में मौखिक अभियोग्यता एवं भाषायी कौशल।**
- **श्रवण कौशल, मौखिक कौशल, लेखन कौशल एवं पठन/वाचन कौशल।**

पंचम अनिवार्य विषय
भाषाः– संकाय एवं विषयों की समझ

उद्देश्य

- **अध्ययन क्षेत्रों के ;अनुशासनात्मकद्ध ज्ञान का अर्थ एवं अवधारणा।**
- **अध्ययन क्षेत्र में विद्यालयी विषय।**
- **अध्ययन क्षेत्रों एवं विषयों का ढांचागत निर्माण एवं प्रक्रिया।**

षष्ठम् अनिवार्य विषय
ज्ञान और पाठ्यक्रम

- ज्ञान की अवधारणा
- ज्ञान के तथ्यों
- पाठ्यक्रम की अवधारणा

सप्तम् ऐच्छिक विषय

अभ्यर्थी द्वारा चयनित ऐच्छिक विषय के अन्तर्गत वह विषय से सम्बन्धित शिक्षण विधियाँ, पाठ योजना का स्वरूप, इकाई योजना, वार्षिक पाठ योजना, नील पत्र आदि का अध्ययन करता है।

अष्ठम् एवं नवम् अनिवार्य विषय
ज्ञान और पाठ्यक्रम

- VIIIth- EPC-1(Enhancing Professional Capacities)
- Reading and Reflecting on Texts (Task and
- Assignment for Courses)
- IXth- EPC-1I (Enhancing Professional Capacities)
- Drama and Art in Education

शिक्षण एवं शिक्षण सम्बन्धी अभ्यास की प्रारम्भिक अवस्था जिसमें प्रशिक्षणार्थी विभिन्न कौशलों का सूक्ष्मता से अध्ययन करते हुए पांच से सात बालकों के समक्ष पांच से सात मिनट शिक्षण कराते हैं।

5 मुख्य शिक्षण कौशलः–

1. **प्रस्तावना कौशल**
2. **प्रश्न कौशल**
3. **व्याख्यान कौशल**
4. **श्याम पट्ट कौशल**
5. **प्रदर्शन कौशल**

प्रदर्शन कौशलः–

- शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया मौखिक नहीं चल सकती इसलिए विषय वस्तु को स्पष्ट करने के लिए समय–समय पर शिक्षक को कुछ क्रिया करके दिखानी पडती है। इस प्रकार क्रिया का सहारा लेकर पाठ को प्रस्तुत करना ही प्रदर्शन कहलाता है।
- **प्रदर्शन के लाभ/महत्वः–**
- 1. प्रत्यक्ष अनुभव देने में सहायक
- 2. उत्सुकता में वृद्धि
- 3. प्रशिक्षणार्थियों में निरीक्षण करने की क्षमता का विकास होता है
- 4. शिक्षण व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक होता है
- 5. प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है

प्रदर्शित सहायक सामग्रीः–

- 1. विषय वस्तु से सम्बन्धित
- 2. छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने वाली
- 3. मितव्ययी एवं सुलभ
- 4. प्रत्यक्ष वस्तु का प्रदर्शन (लाईव मॉडल) चिर स्थायी
- 5. सभी को स्पष्टदर्शी हो
- 6. प्रदर्शन हेतु संकेतक का प्रयोग
- 7. प्रदर्शन में छात्रों की सहभागिता
- 8. समय सीमा का निर्धारण

पाठ योजना निर्माण एवं अनुरूपण शिक्षण

- **सूक्ष्म शिक्षण में सभी कौशलों में निपुण होने के बाद प्रशिक्षणार्थी विद्यालय विशेष में जाकर इनका प्रयोग समग्र रूप से अपने शिक्षण में करता है परन्तु इससे पूर्व क्षेत्र में होने वाली कठिनाइयों का समाधान एवं आत्म विश्वास को प्रबल करने के लिए वह अपने साथी प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष दोनो ऐच्छिक विषयों से सम्बन्धित पांच पाठ योजना प्रस्तुत करता है।**

दैनिक शिक्षण अभ्यास
एवं
ऐच्छिक विषय की समालोच्य परीक्षा

- **प्रशिक्षणार्थी प्रतिदिन अपने दैनिक शिक्षण अभ्यास**

बाद महाविद्यालय में उपस्थित होगें एवं कम्प्यूटर

प्रायोगिक कार्य तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से अवगत

होकर उनमें सहभागिता देगें।